

संताली जीवनी साहित्य

“किसी व्यक्ति विशेष का जीवन वृत्तान्त लेखन को जीवनी साहित्य कहते हैं।” साहित्यिक विधाओं में जीवनी साहित्य (जियोन सॉवहेंत) का विशेष महत्वपूर्ण स्थान है। ‘जीवनी’ का अंग्रेजी पर्यायवाची शब्द “बायोग्राफी” या ‘लाइफ’ है। जीवनी लिखना श्रम-साध्य कार्य है।

संताली का जीवनी साहित्य अधिक समृद्ध नहीं है। अधिकांशतः जन्म से लेकर मृत्यु तक की घटनाओं का विवरण एवं कृतियाँ मात्र जान पड़ती है। अब तक प्रकाशित की गई पुस्तकें निम्नवत हैं—

सन् 1951 ई० में डोमन साहु ‘समीर’ लिखित ‘महात्मा गाँधी’ पुस्तक देवनागरी लिपि में सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग से प्रकाशित हुई है।

सन् 1952 ई० में डोमन साहु ‘समीर’ लिखित ‘रामायण’।

सन् 1970 ई० में धानाय बास्के लिखित “बाबा तिलका तथा भागलपुर।”

सन् 1973 ई० में रेव्ह० आर० मेकफेल लिखित ‘रेव्ह० अण्ड्रे केम्पबेल’ का जीवनी रोमन लिपि में पुखूरिया मिशन से प्रकाशित हुई है।

सन् 1980 ई० में बाडहा बेसरा लिखित ‘तिलका माँझी’ का जीवनी ओलचिकि लिपि में उड़ीसा से प्रकाशित हुई है।

सन् 1997 ई० में साधन कुमार माण्डी द्वारा ‘साधुराम चाँद मुरमू जियोन शोध’ आलेख बंगला लिपि में प्रकाशित किये हैं।

सन् 1999 ई० में बाबूलाल मुरमू ‘आदिवासी’ लिखित “डॉ० डोमन साहु ‘समीर’ जीवन”।

सन् 2004 ई० में रामचन्द्र मुरमू लिखित ‘गुरु गमके पण्डित रघुनाथ मुरमू जीवनी’ ओलचिकि लिपि में “असेका” पछिम बंगला से प्रकाशित हुई है।

सन् 2008 ई० में लिलिबिती मुरमू लिखित ‘हुलगारिया सानताड़को’।

सन् 2009 ई० में आदित्य माण्डी लिखित ‘मित् ओनोड़हिया: जियोनरे’।

सन् 2010 ई० में आदित्य माण्डी लिखित ‘ओनोलियाकोवा: जियन एनेम’ “जीवनी साहित्य” पुस्तक प्रकाशित हुई है।



संताली निबंध साहित्य

‘निबंध’ शब्द का अर्थ है “ग्रंथ रचना करना”। संताली भाषा में निबंध को ‘ओनोल’ कहते हैं। पाश्चात्य साहित्यकार जे०वी० प्रिस्टले का कथन है कि— “Essay is the genuine expression of the original person.” अर्थात् निबंध मौलिक व्यक्तित्व की वास्तविक अभिव्यक्ति है।

निबंध लेखन के चार भेद हैं—

1. **वर्णनात्मक निबंध (Descriptive Essays)** — इसमें किसी घटना का वर्णन रहता है।
2. **विचारात्मक निबंध (Reflective Essays)** — इसमें मनोविज्ञान, दर्शन आदि की विभिन्न मान्यताओं की विवेचना होती है।
3. **भावात्मक निबंध (Emotional Essays)** — इसमें भावुकता का प्राधान्य होता है।
4. **विवरणात्मक निबंध (Narrative Essays)**— इसमें कथा, समय काल, स्थान आदि का विवरण रहता है।

संताली नाटक और उपन्यास के समान ही संताली निबंध का वास्तविक उद्भव आधुनिक काल में ही हुआ है। स्वतंत्रता के बाद भारतीय समाज में एक नई सांस्कृतिक और राजनैतिक चेतना का उदय हुआ जिससे संताली लेखकों ने अनेक विषयों को लेकर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित किये। खासकर इन्होंने समाज सुधार, शिक्षा प्रसार, राजनीतिक गतिविधि, जनता को जागुरुक बनाना तथा राष्ट्रीय भावना का प्रणयन आदि महत्वपूर्ण है। कुछ लेखकों ने संताली लोककथा या गीत के अनुसार इतिहास, सांस्कृतिक, जीवनी, दर्शन, धर्म, रीतिरिवाज तथा पौराणिक कथा से सम्बन्धित निबंध लिखे हैं। इस प्रकार से संताली लेखकों ने अनेकानेक पुस्तकें प्रकाशित किये हैं। जो निम्नवत है—

सन् 1917 ई० में राया सोरेन लिखित ‘छोटाराय देश माँझिया: काथा’, पुस्तक संताल परगना से रोमनलिपि में प्रकाशित हुई। भूमिका में रेव्ह.

पी. ओ. बोडिंग लिखें हैं— “छोटराय देशमाँझीया: काथा पुथी रे दो हुल लाहा “नानकार रेया:” आर “आसाम गुमा कॉलोनी” बाँधावेन रेया: काथा ओल आकाना। छोटराय दो पाहिलको मुद रे बेनागड़िया खोन आसाम कॉलोनी रेये चालाव एना। ओँडे ग्राहामपुर आतू रेये बिरलेना। आर कॉलोनी रेन देशमाँझिये होय एना। आड़ी हाड़ाम कातेये गोयच् एना। सेदाय रेया: उनीया: काथा आजोम काते राया इज मेता: देया, जेमोन ओकाकोय दिसा आकात् ओनाको ओल दोहोय में। आयच् बाय ओल दाड़ेया:ते रायाइज भार आदेया। ओल चाड़हावताय लागित्। ओनागे नोवा नोंडे छापा आकान काथाकोय ओलकेत्ताया 1917 सालरे।”

सन् 1937 ई० में चैत्यन्न कुमार हेम्ब्रम लिखित ‘संताल परगना आर संताल पहाड़िया कोवा: इतिहास’ रोमन लिपि में तालझारी ई०आई०आर० मिशन से प्रकाशित हुई।

सन् 1967 ई० में हिकिम हाँसदा: लिखित ‘लाई चेपेद’ बंगलालिपि में।

सन् 1977 ई० में बाबूलाल मुरमू ‘आदिवासी’ लिखित ‘संताली ओनोल’।

सन् 1978 ई० में बादो बेसरा लिखित ‘होड़ होपोन’ ओनोल।

सन् 1980 ई० में रामचन्द्र मुरमू लिखित ‘तेतेद तुमाल’ बंगलालिपि में।

सन् 1981 ई० में दशरथ मुरमू ‘चम्पा’ लिखित ‘खेरवाड़ बोंसो’।

सन् 1981 ई० में साँवना मुरमू लिखित ‘ओल एतोहोप् काथा’।

सन् 1982 ई० में जेकोब सोरेन लिखित ‘आपनारते आरीबाँदी’ रोमन में।

सन् 1983 ई० में रामी टुडू लिखित ‘खेरवाल साँवता आरी चाली’।

सन् 1985 ई० में डमन हाँसदा: लिखित ‘इज दो ओकोय’ ओलचिकि में।

सन् 1985 ई० में बाबूलाल मुरमू आदिवासी लिखित ‘दिसोम भोक्ता’।

सन् 1985 ई० में साधुराम चाँद मुरमू लिखित ‘इस रोड़’ बंगलालिपि में।

सन् 1986 ई० में बादल किस्कू लिखित ‘डान पातयाव जेल मारसाल’।

सन् 1987 ई० में चुण्डा सोरेन लिखित ‘तिरयो बादोली’ देवनागरी में।

सन् 1987 ई० में रंजित माँझी लिखित ‘चाम्पा दिसोम रेया: नागाम’।

सन् 1987 ई० में कुशाल हेम्ब्रम लिखित ‘बुरु सिंद’ ओलचिकि में।

सन् 1988 ई० में पंचानन हाँसदा: लिखित ‘साँवता रे कारी नागीन’।

सन् 1988 ई० में रातु टुडू लिखित ‘साँवहेंत् आरसी’ देवनागरी में।

सन् 1988 ई० में रूपाय टुडू लिखित ‘एरे साला’ ओलचिकि में।

सानताड़ी साँवहेंत् रेना: ओमोनोम आर हारा [52]

- सन् 1988 ई० में रामचन्द्र मुरमू लिखित 'साँवार साँवहेत् ओनोल' ।
- सन् 1991 ई० में डमन हाँसदाः लिखित 'सिदो कान्हू हुल' ओलचिकि में।
- सन् 1991 ई० में कुशाल बारके लिखित 'बोंगा हातोम' ओलचिकि में।
- सन् 1992 ई० में गोमस्ता प्रसाद सोरेन लिखित 'नोडका गयाबन होड़ नोडकानगे ताबोन समाज' बंगला लिपि में प्रकाशित हुई।
- सन् 1993 ई० में कानहाई लाल टुडू लिखित 'जोमसिम बिनती' ।
- सन् 1993 ई० में टी. के. रापाज लिखित 'हजारीबाग रेयाः इतिहास-1' ।
- सन् 1994 ई० में डॉ० स्टेनशिला हेम्ब्रम लिखित 'संताल कोवाः आरी चाली आरसी' शोध प्रबंध का संताली भाषा एवं रोमन में अनुवादित।
- सन् 1994 ई० में सारदा प्रसाद किस्कू लिखित 'जुड़ासी ओनोल माला' ।
- सन् 1994 ई० में टी. के. रापाज लिखित 'हजारीबाग रेयाः इतिहास भाग-II' ।
- सन् 1995 ई० में दमयन्ती बेसरा लिखित 'सागेन साँवहेत्' ओलचिकि में।
- सन् 1995 ई० में होपोन हेम्ब्रम लिखित 'मानमीयाः आड़ाज् आर ताड़ाम' ।
- सन् 1996 ई० में बिदुभूषण हेम्ब्रम लिखित 'आखिर पावड़ी' ओलचिकि में।
- सन् 1996 ई० में श्याम मुरमू लिखित 'दामपाड़ा' ओलचिकि में।
- सन् 1997 ई० में ए.के. माण्डी लिखित 'बजचाः डाहार' बंगला में।
- सन् 1999 ई० में आदित्य माण्डी लिखित 'सोरोससिरजोनरे जानामआयो' ।
- सन् 1999 ई० में तारासिञ्ज बास्के लिखित 'गेलबार आटाल' बंगला में।
- सन् 1999 ई० में रोमेश किस्कू सम्पादित 'हापड़ामकोवाः जियोन' चरित् ।
- सन् 1999 ई० में बासता सोरेन लिखित 'रान मुरगान' ओलचिकि में।
- सन् 2000 ई० में भैया हाँसदाः लिखित 'चासा संदेस' देवनागरी में।
- सन् 2001 ई० में जगन्नाथ मुरमू लिखित 'आबिन दो ओकोय' ।
- सन् 2002 ई० में अर्जुन मुरमू लिखित 'नागाम आर 'साँवार साड़ेस' ।
- सन् 2002 ई० में ए. मुरमू सम्पादित 'होड़होपोनकोवाः उपरूम' रोमन में।
- सन् 2002 ई० में धीरेन्द्र नाथ बारके सम्पादित 'होड़रोड़ आरी ओनोल गानथार' बंगला लिपि में प्रकाशित हुई।
- सन् 2004 ई० में गंगाधर हाँसदाः लिखित 'लेपेच् तिरिल' ओलचिकि में।

सन् 2004 ई० में लखन मारांडी लिखित 'डाहारडीह खोन मारसाल डाहार' ।

सन् 2005 ई० में डॉ० रतन हेम्ब्रम लिखित 'सानताड जुमिद दाड़े' ।

सन् 2006 ई० में मोहन चन्द्र बास्के लिखित 'चापो जुडू' ।

सन् 2006 ई० में चैतन्य प्रसाद माँझी लिखित 'आलगो चालगो' ।

सन् 2007 ई० में डॉ० कृष्ण चन्द्र टुडू लिखित 'खेरवाल आरी बाँदी' ।

सन् 2007 ई० में बास्के रामसुन्दरम् लिखित 'संगल जाति सानताड कोवा: मारे इतिहास' बंगला लिपि में प्रकाशित हुई ।

सन् 2007 ई० में पाञ्चोगोपाल हेम्ब्रम लिखित 'बाहा पोरोब निबंध' ।

सन् 2007 ई० में डॉ० कृष्ण चन्द्र टुडू लिखित 'खेरवाड बिनतीच' ।

सन् 2007 ई० में भजराय हेम्ब्रम लिखित 'मादोसिज बिडराव' ।

सन् 2008 ई० में राम किसन मुरमू लिखित 'स्टेण्डार्ड सांवताली भाषार संघाने' संताली भाषा सम्बन्धित बंगला भाषा में प्रकाशित हुई ।

सन् 2008 ई० में बोयहा विश्वनाथ टुडू लिखित 'साँवहेंत् सोंधायनी' ।

सन् 2009 ई० में कलेन्द्र नाथ माण्डी लिखित 'ओनोल बिन्डा' ।

सन् 2010 ई० में बास्के राम सुन्दरम् लिखित 'सिरजोन पुरीरेना: सिरजोनकाथा' ।

सन् 2010 ई० में यशोदा मुरमू लिखित "साँवहेंत् दारे ओलचिकि में ।

सन् 2010 ई० में प्रो. दिगम्बर हाँसदा: लिखित 'गानाड माला' ओलचिकि में प्रकाशित हुई है ।



संताली कहानी साहित्य

कहानी या गल्प एक रचना है। जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना या लिखना को कहानी कहते हैं।

आर.एल. स्टीवेन्सन के अनुसार— "The short story is not the transcript of life but a simplification of some side of it."

तत्त्व :- "कहानी की विशेषताओं" के आधार पर निम्नलिखित "तत्त्व" है—

1. कथावस्तु (काथा)।
2. पात्र तथा चरित्र चित्रण (चरित चितार)।
3. कथोपकथन या संवाद (रोपोड़)।
4. वातावरण (हालोत्)।
5. भाषा-शैली (पारसी)।
6. उद्देश्य (जोस)।

भाग :- "कहानी की विषय" के आधार पर निम्नलिखित भाग है—

1. ऐतिहासिक (नागामियारी)।
2. सामाजिक (साँवतारियारी)।
3. आर्थिक (कावडीरियारी)।
4. राजनैतिक (राजयारी)।

कहानी की समापन दृश्य के अनुसार निम्नलिखित भाग है—

1. मिलनान्त - सुखान्त (सुकाली)।
2. अमिलनान्त - दुखान्त (दुकाली)।

संताली कहानी का भाग्य सन् 1942 ई० से पदार्पण होता है। जब "मारसाल" नामक पत्रिका पूर्वी सिंहभूम से प्रकाशित हुई, तब उस पत्रिका में चुनकू राम दुडू रचित "उल चाकती" नामक कहानी प्रकाशित हुआ।

इसके उपरान्त अनेकानेक कहानियाँ विभिन्न पत्रिकाओं में तथा छोटी-छोटी कहानी संग्रह पुस्तकें प्रकाशित हुई।

सन् 1952 ई० में बालकिशोर बास्की लिखित 'कुकमू' देवनागरी लिपि में।

सन् 1975 ई० में निरमल बी० के० सोरेन सम्पादित 'गाथाव माला' रोमनलिपि में।

सन् 1978 ई० में डॉ० डोमन साहू सम्पादित 'मायाजाल' देवनागरी में।

सन् 1981 ई० में दुरबीन सोरेन लिखित 'जुडासी काहनीमाला' बंगला में।

सन् 1981 ई० में बालकिशोर बास्की लिखित 'पे पावा चावले' देवनागरी में।

सन् 1985 ई० में सोना हेम्ब्रम लिखित 'गालाडमाला' बंगला लिपि में।

सन् 1985 ई० में परिमल हेम्ब्रम लिखित 'रेंगेच्' बंगला लिपि में।

सन् 1987 ई० में चुण्डा सोरेन लिखित 'पेया पोरायनी' देवनागरी में।

सन् 1988 ई० में हृदय नारायण मण्डल लिखित 'सिंदुर साकाम' देवनागरी में।

सन् 1988 ई० में सारदा किस्कू 'खेबा' लिखित 'सलम लटम' बंगला में।

सन् 1989 ई० में डॉ० डोमन साहू 'समीर' लिखित 'माताल' देवनागरी में।

सन् 1989 ई० में बिमल बास्के लिखित 'दुलाड़ धोन बिकोल मोन'।

सन् 1989 ई० में नुनुलाल लिखित 'दुलाड़ चिन्हा' देवनागरी में।

सन् 1991 ई० में रूप चाँद हेम्ब्रम लिखित 'उरालिया' बंगला लिपि में।

सन् 1992 ई० में सारदा किस्कू 'खेबा' लिखित 'मोड़ेकोतुरुयको'।

सन् 1992 ई० में गौरचन्द्र मुरमू लिखित 'काहनी थोपे' बंगला में।

सन् 1993 ई० में मदन मोहन मुरमू लिखित झिनिक झिपिर बंगला में।

सन् 1993 ई० में नरेस बेसरा लिखित 'झलक डबर' बंगला लिपि में।

सन् 1993 ई० में दुरबिन सोरेन लिखित 'सिबोड़ सांडासी' बंगला में।

सन् 1993 ई० में कानहाईलाल टुडू लिखित 'होड़ हुलसाई' ओलचिकि में।

सन् 1994 ई० में कलेन्द्र नाथ माण्डी लिखित 'आरसी' बंगला लिपि में।

सन् 1994 ई० में दुगाई टुडू लिखित 'साँजीमाई' बंगला लिपि में।

सन् 1994 ई० में अनादि हेम्ब्रम लिखित 'काहनी दुसा' बंगला में।

सन् 1995 ई० में आदित्यमित्र संताली लिखित 'जुत आर मारसाल'।

सन् 1996 ई० में मारसाल मुरमू लिखित 'मेला ओड़ा' ओलचिकि में।

सन् 1997 ई० में सोभानाथ बेसरा लिखित 'पेजोड़ काहनी' ओलचिकि में।
 सन् 1997 ई० में काबा: सानताड़ लिखित 'सागाय' बंगला लिपि में।
 सन् 1997 ई० में यतीलाल मानडी लिखित 'आटाल बाहा' बंगला में।
 सन् 1997 ई० में गोराचांद मुरमू लिखित 'मारसाल' बंगला लिपि में।
 सन् 1997 ई० में निरंजन हाँसदा: लिखित 'हासुर बेड़ा आरा: आहला'।
 सन् 1997 ई० में सुनिल सोरेन लिखित 'हिपिड़ आञ्चर' बंगला में।
 सन् 1998 ई० में सारदा किस्कू 'खेबा' लिखित 'सापाप्' बंगला में।
 सन् 1998 ई० में गोराचांद टुडू लिखित 'टुडू' बंगला लिपि में।
 सन् 1999 ई० में रूपचाँद हेम्ब्रम लिखित 'ओनोरोम' बंगला लिपि में।
 सन् 1999 ई० में तारासिञ्ज बास्के लिखित 'दुलाड़ माया' बंगला में।
 सन् 1999 ई० में निरंजन हाँसदा: लिखित 'दार सादले' बंगला में।
 सन् 1999 ई० में भोगवत किस्कू लिखित 'हिहिड़ी पिपिड़ी' बंगला में।
 सन् 1999 ई० में बाबूलाल मुरमू 'आदिवासी' लिखित 'झाली' देवनागरी में।
 सन् 1999 ई० में नुनकू सोरेन लिखित 'चेहराकुड़ी लिलमुनी' देवनागरी में।
 सन् 1999 ई० में जगन्नाथ मुरमू लिखित 'सिंगाड़ सेंगेल' ओलचिकि में।
 सन् 2000 ई० में श्याम बेसरा 'जिवीराड़ेच्' लिखित 'दामिन' देवनागरी में।
 सन् 2000 ई० में लक्षण सोरेन लिखित 'तेरदेज' बंगला लिपि में।
 सन् 2001 ई० में गौरचन्द मुरमू लिखित 'बारठोप मेत्दा:' बंगला में।
 सन् 2001 ई० में चैतन्य टुडू लिखित 'दाल झाली कुलाई' ओलचिकि में।
 सन् 2001 ई० में चैतन्य मांझी लिखित 'तोल जालाम बोवाड़' ओलचिकि में।
 सन् 2004 ई० में मानसू गोपाल टुडू लिखित 'साकाम बिंडा' ओलचिकि में।
 सन् 2004 ई० में यदुमनी बेसरा सम्पादित 'जियोन गाडा' ओलचिकि में।
 सन् 2005 ई० में श्याम बेसरा लिखित 'दामिन कुलही' देवनागरी में।
 सन् 2005 ई० में बादल हेम्ब्रम लिखित 'मानमी' बंगला लिपि में।
 सन् 2006 ई० में सचिन मानडी लिखित 'निधान आड़ाड' ओलचिकि में।
 सन् 2007 ई० में बादल हेम्ब्रम अनुवादित 'काथनी थोपे' ओलचिकि में।
 सन् 2008 ई० में साहित्य अकादेमी प्रकाशित 'काहनी माला' ओलचिकि में।

सन् 2008 ई० में जुहुम हेम्ब्रम लिखित 'सुमीदाय काहनीबिंडा' ओलचिकि में।
 सन् 2009 ई० में डॉ० कृष्ण चन्द्र टुडू लिखित 'साँवता' देवनागरी में।
 सन् 2009 ई० में अर्जुन हाँसदा: लिखित 'कांडा मानमी' ओलचिकि में।
 सन् 2010 ई० में जुहुम हेम्ब्रम लिखित 'उसकुर सेंगेल' ओलचिकि में।
 सन् 2010 ई० में बाबूलाल टुडू लिखित 'ले चांवरा ले भांवरा' बंगला में।
 सन् 2010 ई० में समाय किस्कू लिखित 'काँहनी काँदही' ओलचिकि में।
 सन् 2010 ई० में जोबा मुरमू लिखित 'बेवरा' काहनी ओलचिकि में।
 सन् 2011 ई० में द्विजापद हाँसदा: लिखित दुलाड दो ओकारे बिंगला लिपि में

उपरोक्त कहानी पुस्तकों में छोटी-छोटी पाँच से दस कहानियाँ हैं। इसके अलावे संताली के विभिन्न पत्रिकाओं में अनेक कहानियाँ प्रकाशित हुई हैं। कहानियों में— समाज में स्त्री की स्थान, आर्थिक समस्या तथा मौलिक अधिकार की चित्रण है। चरित्र चित्रण, कथोपकथन आदि के कलात्मक रूप हैं। कुछ कहानियों में अपूर्व नाटकीयता, रमणीयता का समावेश है।

ऊल चाकती — इस कहानी के लेखक चुनकू राम टुडू हैं। यह कहानी सबसे पहले "मारसाल" नामक 'हस्तलिखित' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। कहानी का विषय वस्तु इस प्रकार है।—

"चात बोंगा दिन ताँहेंकाना। आहार, पुखरी, गाडा, नाला रेना: दा: हों आजेत् सात् आकाना। जाहाँ उडाड मेना: आ, ओना हों बोकोल बोडे आकाना। सुना बाबू दो बाँदडीह उमिन स्कूल खोन छुटी काते दारड़ा गाडा धारे रे मेना: ऊल दारे बुटा रे दुडुप् काते, जिराव आकानाय। ओनकान ओक्तो रे आसोनबोन सेन खोन पानमुनी हेच् काते उनी हों ओना गाडा धारे रेना: ऊल दारे बुटा रेगेय जिराव एना। आसोनबोनी रेल स्टेशन ते हिजू: सेनो: होरतिन कोदो, ओना दारे बुटा रे दो मित्घाडी को जिरा: गया। सुना आर पानमुनी दो बेचिनहाप् होड़किन ताँहेंकाना। आपान—आपिन दुडुप् थिर काते सितुड झांज खोन पाराडगोत जाम लागित् गे हानते नातेकिन कायो: बाड़ायेत् ताँहेंकाना। नोडकान ओक्ते रे आकिन तालारे मित्घाड "ऊलबिली" दारे खोन जुर एना। सुना हालाड केदाय आर पानमुनी सेन कोयो: कातेय मेनकेदा— ऊलबिलीम जोमा? पानमुनी मेनकेदाय— हें जोमाज, मा चाकतीय में। सानो दो चाँदीते ऊलचाकती

काते पानमुनीय एमा: देया। उपरूम एनाकिन। तायोम बिदालरे, आकिन तालारे ऊल बिली लेका सिबिल दुलाड़ रासा सारसाव एना। जुरीपारीयेनाकिन आखिर दिन रेदो। घारोंच किन बेनावकेदा दुलाड़ सिकड़ीते।

मेंड़हेत् सिकड़ी ते तोल आकान कामार : इस कहानी के अनुवादक है, के. ए. टुडू। कहा जाता है कि यह कहानी सबसे पहले फरवरी 1922 ई० को "पेड़ा होड़" पत्रिका में प्रकाशित हुई थी, बाद में सन् 1990 ई० को "होड़ सोम्बाद" पत्रिका में प्रकाशित हुई। यह अंग्रेजी कहानी से अनुवादित है। कहानी का विषय वस्तु इस प्रकार है—

"आडी दिन रेया: काथा काना। मित्टाड कामार चेत् चोड ए बाड़िचलेत् इयाते हाजोत लेदे ताँहेंकाना को। हाजोत् रे मेंड़हेत् सिकड़ी तेको तोल दोहो आकादे ताँहेंकाना। उनी दो दाड़ाय मेन्ते, उपाय जाम बाड़ाये एयहोप् एना। खुब मोन लागाव काते उनी दो ओना सिकड़ी छिंड़ाव ए एयहोप् एना। उनीया: साना नोवा गे ताँहेंकाना जे सिकड़ी रेया: जहाँ जायगा रे बेदाड़े (कोमजोर) लेकाय जेल जाम लेखान, ओना जायगा रे रापुत् काते ए छाडावो: आ।

सिकड़ी छिंड़ाव—छिंड़ाव ते मित् जायगा रे उनी दो आया: आयच् निजे गे ओना सिकड़ी ये बेनाव आकात् रेया: चिन्हा ताँहेंकाना। उनी कामार दो हाजोत रेया: सिकड़ी ए बेनाव बाड़ाया। आर जावगे बाड़ाई काते ए मेना— "बाड रापुदो:आ मेंड़हेत् सिकड़ी"। इज लेका दो ओकोय हों ओहोको बेनाव दाड़े लेया।" आर सारी गे उनी दो नामडाक मेंड़हेत् सिकड़ी बे:नाविच् कामार ए ताँहेंकाना। नितो: उनी दो आयच् तीते बेनाव आकात् मेंड़हेत् सिकड़ी आज्ञा: तीरे जेलकाते आडीतेत् ए आस छाडावेना। एन्ते बाज्चावो: भोरसा चाबायेन ताया। आयच् ए ला आकात् गाड़ादा: रेय उनुम एना।



दो ताला होर ताला बिररे हेमड़ोमुयुद कातेय तिङ्गूयेना, कोड़ाकोवा: चरित
जेलते, खेलोण्ड टाण्डी रे।